

त्प्रिं शर इव भयत्ताम् *er mache sie zu Rohren d. h. zerbrechlich wie diese* AV. 8, 8, 4. — b) *Pfeil*: उपोतपरुषा घृषिष्यधन्वनः ÇĀṆḤ. ÇĀ. 14, 22, 20. LĪṬ. 8, 5, 7. — c) = पत्रुष; s. u. 3, b. — 3) f. परुषा Bez. einer Art Röhre Verz. d. Oxf. H. 204, a, 28. — 4) f. परुषी a) N. pr. eines Flusses des Pendshab, welcher später Irāvati, heut zu Tage Ravi heisst (die Knottige, d. h. an Ausbuchtungen oder Krümmungen Reiche, [Nir. 9, 26] oder die Rohrigē, arundinosa) RV. 7, 18, 8, 9. सत्यमिह्वा महेन्दरि परुष्यव देदिशम् 8, 63, 15. 10, 75, 5. Vgl. पुरोक्षी. — b) viell. Wolke (die Knottige, Geballe oder die Bunte): उत स्म ते (मरुतः) परुष्यामूर्णा वसत शुन्ध्युवः RV. 5, 52, 9. (इन्द्रः) श्रिये परुष्यामृषमाण ऊर्णा पस्याः पर्वाणि सुध्यापं विव्ये 4, 22, 2. — 5) n. a) eine blaubühende Barleria ÇĀBDAK. im ÇKDr. — b) = पत्रुष d. BĀVAPR. im ÇKDr. Nach ÇĀBDAK. und ÇĀBDAK. bei WILSON als m. auch N. des Baumes selbst. — Vgl. पारुष्य.

परुषातर (परुष + अतर) adj. *rauh, barsch*: वचस् ad ÇĀ. 69, 2. न च सपत्नज्ञेष्वपि तेन वागपरुषा (instr. von अपरुष) परुषातरमीरिता (adv.) RAGH. 9, 8. von Personen: सेवकः स्वामिनं दृष्टि कृपणं परुषातरम् PĀNĀT. 1, 56.

परुषात्कं (परुष + आत्का) m. *eine best. Rohrart* AV. 8, 8, 4.

परुषित (von परुष) adj. *roh —, barsch —, grob angefahren, — behandelt* MBH. 7, 7042. R. 5, 89, 58. 6, 94, 20. साधोः परुषितस्यापि मनो न याति विक्रियाम् Hit. I, 81.

परुषिमन् (wie eben) m. *rauhes Aussehen* (im Gegensatz zu der Glätte und Fülle des wohlgenährten Viehes): (पशवः) अणिमानमेव तत्परुषिमाणं निपत्ति AIT. Br. 4, 26.

परुषीकृत (von परुष mit 1. कर) adj. 1) *befleckt, schmutzig gemacht*: प्राग्भिः कृतः HARIV. 4771. — 2) *roh —, barsch angefahren* Spr. 902.

परुषेतर (परुष + इतर) adj. *von reiner Farbe, hell strahlend*: उत्तर (वत्सु) RAGH. 5, 68. = कामल Schol. in der ed. Calc., *hilaris* STENZLER.

परुषोक्ति (परुष + उक्ति) f. *eine barsche, rohe Rede*; pl. Spr. 103. Davon क्क adj. *barsche, rohe Reden führend* ÇĀṬĪB. im ÇKDr.

परुषो s. u. परुष.

परुष्य (von परुस्) adj. *bunt, mannichfaltig*: अथ यद्दस्मासीत्तत्परुष्यं व्यसर्पद्भिरौ गवय ऋष्य उध्रे गर्दभ इति AIT. Br. 3, 34.

परुस् URĪDIS. 2, 118. n. 1) *Knoten, Stengelglied der Pflanzen* (AK. 2, 4, 5, 27. H. 1130. HALĪJ. 2, 34); *Gelenk, Glied des Körpers*: काण्डात्काण्डात्प्ररोक्षेति परुषः परुषस्परि VS. 13, 20. 20, 27. यत्परुषि दिवं यदत्सरा TBa. 1, 6, 8, 6. यस्यौषधीः प्रसर्थाङ्गमङ्गं परुष्यरुः RV. 10, 97, 12. परुर्दधे 100, 5, 1, 162, 18. AV. 4, 12, 3. सं दधत्परुषा परुः 4, 12, 2, 3. पञ्चषि विद्वाक्स्तेव 9, 3, 3, 8, 18. 10, 1, 8, 20. VS. 23, 41. ÇĀT. Br. 6, 1, 2, 31. KAUC. 124. — 2) *Fuge*: परुषा ययिवा अति RV. 9, 15, 6. — 3) *Abschnitt, Abtheilung*: यज्ञस्यं विद्वान्परुषश्चिक्विवान् RV. 10, 53, 1. यज्ञपरुषोरनन्तरित्यै TBa. 1, 6, 9, 1; vgl. अङ्गा पञ्चषि संवत्सरस्य TS. 2, 5, 6, 1. त्रिं adj. Beiw. Vishṇu's, der in der Form des Opfers aus drei Abschnitten besteht, BULG. P. 3, 13, 30. — परुस् verhält sich zu पर्वन् wie धनुस् zu धन्वन्.

परुःसंसं (परुस् + संसं) m. *Gelenkbruch* AV. 6, 14, 1.

पत्रुष = पत्रुषक RATNAM. 254. SUÇR. 2, 76, 6.

पत्रुषका m. *Grewia asiatica* Lin., ein Baum, dessen Beeren zur Bereitung eines kühlenden Trankes benutzt werden; beng. फलसा, hindust.

پهالسا. Nach Andern *Xylocarpus granatum* Koen., beng. परुष. n. *die Frucht* RATNAM. 254. ÇĀṆḤ. ÇĀ. 15, 19, 26. SUÇR. 1, 141, 3. 5. 228, 14, 21. 234, 1. 2, 130, 19. 222, 19. 413, 21. VARĪH. BRH. S. 53, 50.

परै (loc. von पर) adv. *darauf, fernerhin, künftig*: ततो ऽकामाग्य परे त्वामवोचम् MBH. 13, 2880. अद्याद्या अद्य इन्द्र त्रास्व परे च नः RV. 8, 50, 17. मध्ये वाङ्गस्ततो ऽपि परे ऽथ वा oder auch nach Mittagszeit AMAR. 9.

परेङ्गण und परेङ्गण n. *nomm. act. von इङ् (ईङ्) und इङ्* mit परा P. 8, 4, 32, Sch.

पैरेण (instr. von पर) adv. *praep. weiterhin, vorüber, jenseits, hinaus über* (mit dem acc.); *Gegens. अवेरेण*. RV. 4, 164, 17. 18. पैरेणोक्ति नवति नान्याङ् अति AV. 10, 1, 16. किमवत्तम् AIT. Br. 8, 14. अवेरेणैव वै देवान्काव्याः परेणैव पितृन् 3, 37. याश्चितं परेणायो याश्चावेरेण ÇĀT. Br. 7, 1, 2, 4, 5, 3, 4, 15. 9, 4, 2, 10, 5, 4, 2. सो ऽयमग्निः परेण मृत्युमतिक्रान्तो दीप्यते 14, 4, 4, 13. fgg. KAUC. 103. परेणास्यति KĀTJ. ÇĀ. 17, 2, 4. अतो ऽम्भः परेण दिवम् AIT. Up. 1, 2. नाकम् KĀIV. Up. in Ind. St. 2, 10. परेण प्रैकि मुञ्चास्मान् gehe (bei uns) vorüber MBH. 1, 8422. परेणास्मान्प्रैकि वै कृव्यात्क 8414. तथा चरति तिग्मांशुः परेण भुवनं सदा 3, 2983 (2988). ममाग्रमः — त्रियोजनं शैलमिमं परेण 10037. hernach, nachher: अर्वाह्यब्दाङ्गरेत्स्वामी परेण नृपतिर्क्रेत् M. 8, 30. mit dem abl. oder gen. nach: परेण ते वर्षशतात्र भविष्यति MBH. 12, 812. किं वा मृत्योः परेण विधास्यति SĪH. D. 53, 15. मध्ये वाङ्गस्ततो ऽपि परेण वा oder auch nach Mittagszeit AMAR. 9, v. l. परेण तु दशाहस्य न दद्यान्नापि दापयेत् M. 8, 223.

परेत (partic. von 3. इ mit परा) 1) adj. *verstorben, m. ein Verstorbener* H. 1358. an. 2, 180. MED. t. 126. HALĪJ. 3, 7. Vgl. u. इ. — 2) n. *eine Art von Gespenstern* H. an. MED.

परेतभूमि (प + भू) f. *Leichenacker* KUMĀRAS. 3, 68.

परेतराज (प + राज्) m. (nom. ऽराज्) *der Fürst der Verstorbenen*. Beiu. JAMA'S AK. 1, 1, 4, 53.

पैरेति (von 3. इ mit परा) f. *Weggang*: एतौ, परेतौ RV. 10, 178, 2.

पैरेद्यवि (पै, loc. von पर, + द्यवि, loc. von 3. दिव्, द्यु) adv. *am folgenden Tage, morgen* P. 5, 3, 22. VOP. 7, 110. AK. 3, 5, 21. H. 6. 202.

पैरेद्युस् adv. *dass. WILS.* (angeblich nach AK.) und ÇKDr. (angeblich nach VOP.). — Vgl. अपैरेद्युस्.

पैरेप adj. *von wo sich das Wasser zurückgezogen hat; = peragata* अपो यत्र ÇKDr. nach SIDDH. K.

पैरेप्राण (पैरे + प्राण) adj. *mehr als das Leben geltend*: कर्दयाणोपैरे प्राणाः (sic) प्रायेण स्यार्थसंचयाः KATHĀS. 18, 387. Man hätte eher परःप्राण erwartet.

पैरेमन् nach BENFEY wohl so v. a. परीमन्ः अरं शक् परेमणि (गमेम) SV. 1, 3, 1, 2, 6.

पैरेश (पर + ईश) m. *der oberste Herr*, Beiw. Brahman's MĀNK. P. 46, 7. Vishṇu's BĀG. P. 3, 5, 44. Verz. d. Oxf. H. 9, a, 3 v. u. पैरेशेश gleichfalls von Vishṇu MBH. 7, 6471.

पैरेणु f. *eine Kuh, die öfters gekalbt hat*, H. 1268. क्का f. *dass.* AK. 2, 9, 71. HALĪJ. 2, 117.

पैरेधित (पर + एधित, partic. vom caus. von एध्) 1) adj. *von einem Andern grossgezogen; nach Andern m. Diener* AK. 2, 10, 18. H. 361. HALĪJ. 2, 196. — 2) m. *der indische Kuckuck* (vgl. परभृत्) ÇĀBDAK. im ÇKDr.